"चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 6 जुलाई 2018 को ग्राम पंचायत लिप्पा, जिला किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के सरंक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा वित्त पोषित परियोजना "मूरंग वन परिक्षेत्र, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता" के तहत **"चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान "** पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में ग्राम पंचायत लिप्पा के 40 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया ।

डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी जिला विकास प्रबंधक, किन्नौर (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद कुमारी रतन मंजरी नेगी, प्रधान ग्राम पंचायत, लिप्पा, श्री गीता राम नेगी, जिला परिषद सदस्य, श्री श्याम लाल नेगी, वन अधिकारियों, वक्ताओं तथा किसानों एवं बागवानों का अभिनन्दन एवं स्वागत किया । अपने स्वागत संबोधन में वैज्ञानिक डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का पारिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है । यह अपनी स्वादिष्ट एवं पोषक गिरी के लिए प्रसिद्ध है तथा विश्व में यह बहुत ही कम स्थानों में पाया जाता है । यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत होने के साथ साथ उनके आहार एवं रीति -रिवाजों का भी अभिन्न् अंग है ।

हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20 हेक्टेयर) जिले में पायी जाती है, परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है । इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शाखाओं की अनियंत्रित कटाई से उत्पन्न समस्या से अधिकतर लोग परिचित नहीं हैं जिससे न केवल इसका पुनर्जनन कम हो रहा है अपितु शंकुओं के उत्पादन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है । यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जायेंगें और लोग इससे होने वाले लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जाएँगे । उन्होंने यह भी बताया की वन कानून के तहत प्राकृतिक वन सरकारी संपत्ति होते हैं परन्तु किन्नौर के लोगों को चिलगोजा बीज एकत्रित करने के अधिकार हैं इसलिए इस तरह की विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्यधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके । इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवाएं भी प्राप्त होती रहेंगी ।

श्री श्याम लाल नेगी, जिला परिषद सदस्य ने अपने संबोधन में कहा चिलगोजा किन्नौर क्षेत्र में पाया जाने वाला एक बहुत ही महत्वपूर्ण पौधा है तथा इसका यहाँ के निवासियों की आर्थिकी एवं पर्यावरण संतुलन में इसका महत्वपूर्ण योगदान है पर चिलगोजा के शंकुओं को

एकत्रित करने के दौरान शाखाओं की अंधाधुंध कटाई बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है तथा इस समस्या से निपटने के लिए लोगों को ही आगे आना होगा । उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से जिला किन्नौर के किसान एवं बागवान ज़रूर लाभान्वित होंगे ।

इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए श्री गीता राम नेगी, पंचायत प्रधान, लिप्पा ने

संस्थान के प्रयास की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि चिलगोजा के जंगलों के सरंक्षण के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम से उनके गांव के किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे । उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया ।

मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी जिला विकास प्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), किन्नौर ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि बैंक अपनी ओर से अपनी योजनाओं के

माध्यम से किसानों तथा बागवानों की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है और कहीं न कहीं ग्रामीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है । इस कड़ी में बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना “चिलगोजा” के अंतर्गत आज इस महत्वपूर्ण विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है तथा भविष्य में भी बैंक इस तरह के प्रयास करता रहेगा । उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की इस पहल कि सराहना की और यह भी कहा कि भविष्य में भी बैंक इस तरह के प्रयास करता रहेगा । उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से जिला किन्नौर के किसान तथा बागवान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा शंकुओं का दोहन करेंगे जिससे यह पौधा तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहेंगे । उन्होंने लोगों के आग्रह पर नाबार्ड के विभिन्न योजनाओं के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी तथा चिलगोजा के बीजों के व्यापार का सीधा लाभ किसानों एवं बागवानों को मिले इसके लिए उन्हें किसानों से FPOs (Farmer Producer Organization) बनाने का आग्रह किया ।

तकनीकी सत्र के दौरान चिलगोजा संरक्षण से संबंधित विभिन्न विषयों पर किसानों एवं बागवानों को विस्तार से जानकारी दी गई । डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों एवं बागवानों को 'चिलगोजा संरक्षण में चिलगोजा शंकुओं के सतत् तुड़ान की आवश्यकता' से अवगत करवाया तथा चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की असंवहनीय तरीके से कटाई से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए उचित उपकरण (मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर) के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया ।

अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद, कुमारी रतन मंजरी नेगी ने 'चिलगोजा वन संरक्षण में सामुदायिक योगदान के महत्व' के बारे में लोगों को बताया । उन्होंने यह भी कहा कि यह किन्नौर में रहने वाले हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे चिलगोजा जैसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आगे आकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें ।

श्री, लाल सिंह नेगी, वन परिक्षेत्र अधिकारी ने 'चिलगोजा वन क्षेत्र की समस्याओं तथा उनके समाधान' के बारे में लोगों को जागरूक किया । उन्होंने यह भी कि चिलगोजा की पैदावार और पुनर्जनन को बढ़ाने के लिए चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के दौरान शाखाओं की अत्यधिक कटाई से चिलगोजा के वृक्षों को हो रही क्षति को रोकना होगा क्योंकि इस क्षेत्र के लोग आर्थिक रूप से चिलगोजा वृक्षों पर अत्यधिक निर्भर हैं । इसी दौरान लोगों ने चिलगोजा से सम्बंधित अपनी समस्याएं वन अधिकारियों के समक्ष रखीं एवं वन अधिकारियों ने भी उन्हें पूर्ण सहयोग का आशवासन दिया ।

कुमारी वर्षा, परियोजना सहायक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 'मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर' के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को कैसे तोड़ा जाये के बारे में लोगों को साथ के चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर इस तकनीक का प्रदर्शन किया । इसी दौरान चार मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर भी पंचायत प्रधान को मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान किये गए ।

अंत में डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी जिला विकास प्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) किन्नौर, अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद कुमारी रतन मंजरी नेगी, प्रधान ग्राम पंचायत, लिप्पा, श्री गीता राम नेगी, जिला परिषद, श्री श्याम लाल नेगी,

वन अधिकारियों तथा किसानों एवं बागवानों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया । उन्होंने चिलगोजा परियोजना में प्रस्तावित जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान करने के लिए निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), शिमला, हिमाचल प्रदेश का भी धन्यवाद किया ।

मीडिया कवरेज

वैज्ञानिक विधि से तोड़ सकेंगे किसान चिलगोजा, नहीं होगा पेड़ों को नुकसान

शिमला | किन्नौर जिला में किसानों की आए का मुख्य स्त्रोत चिलगोजा को अब किसान वैज्ञानिक विधि से तोड़ सकेंगे। वैज्ञानिक विधि से जहां पेड़ की शाखाओं को नुकसान नहीं होगा, वहीं, विलुप्त हो रही इस प्रजाति को भी बचाया जा सकेगा। एचएफआरआई शिमला में चिलगोजा के तुड़ान को लेकर एक विशेष प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इसमें किन्नौर की लिप्पा पंचायत के 40 किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान किसानों को तुड़ान के लिए संस्थान तथा राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा मुफ्त में प्रूनर भी प्रदान किए गए। कार्यशाला के दौरान एचएफआरआई वैज्ञानिक डॉ. स्वर्ण लता ने बताया कि चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है।

चिलगोजा शंकुओं के वैज्ञानिक विधि से तुड़ान पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिमला, (आपका फैसला)। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा शुक्रवार को ग्राम पंचायत लिप्पा, जिला किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना इम्पूर्ण वन परिवेश, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता के तहत चिलगोजा शंकुओं के वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें ग्राम पंचायत लिप्पा जिला किन्नौर के लगभग 40 किसानों तथा बागवानों तथा वन मंडल किन्नौर के 8 अग्रिम पंक्ति फ्रंट लाइन कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन, विजय नेगी, मंडलीय प्रबंधक, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा किया गया तथा इस अवसर पर जिला परिषद् सदस्य, श्याम लाल तथा ग्राम पंचायत लिप्पा के प्रधान, गीता राम तथा महिला कल्याण परिषद् की अध्यक्ष, कुमारी रतन मंजरी इस आयोजन के दौरान मुख्य रूप से उपस्थित रहीं। इस अवसर पर डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि, ग्राम पंचायत के प्रतिनिधियों, वन विभाग के कर्मचारियों, किसानों एवं बागवानों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। अपने स्वागत संबोधन में डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का पारिस्थितिकी, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है। यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्रोत होने के साथ-साथ उनके आहार एवं रीति-रिवाजों का भी अभिन्न अंग है। परंतु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है। इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शाखाओं की अनियंत्रित कटाई से न केवल इसका पुनर्जनन कम हो रहा है, अपितु शंकुओं के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विजय नेगी, मंडलीय प्रबंधक, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा चिलगोजा एक ऐसा वृक्ष है, जो सामाजिक वानिकी के रूप में बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि किन्नौर जिले के अधिकांश ग्रामीण इस वृक्ष पर अतिरिक्त आय के लिए निर्भर रहते हैं।

****